Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

स्त्री–मुक्ति विमर्श के भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण : एक अवलोकन

डॉ० दीपेन्द्र
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ० विशाल कुमार लोधी
प्रवक्ता (समाजशास्त्र विभाग)
एस०एस०वी० (पी०जी०) कॉलेज, हापुड

स्त्री–मुक्ति विमर्श को कई दृष्टिकोणों से परखा जा सकता है काल की दृष्टि से इसे इतिहास, पौराणिक मिथक एवं वर्तमान परिदृश्य के आधार पर परखा जा सकता है तो अवधारणा की दृष्टि से इसे अलग तरह से परिभाषित किया जा सकता है इसकी परिभाषा लैंगिक आधार पर निर्मित होती है इस कारण भिन्न–भिन्न होना स्वाभाविक है स्त्री–मुक्ति की परिभाषा पुरूष अपने दृष्टिकोण से करता है जो स्त्रियों की आकांक्षा से अलग होती है। स्त्रियों को इस आंदोलन के प्रति अपनी दृष्टि के अनुरूप स्त्री–मुक्ति की एक अलग समझ होती है। हालांकि स्त्री–पुरूष दोनों की समझ की परंपरावादी, मध्यममार्ग्री व आधुनिकतावादी समझ के आधार पर भिन्न–भिन्न रूपों में सामने आती है।

स्त्रियों का एक वर्ग स्त्री–स्वतंत्रता की परिभाषा, परम्परा को बरकरार रखते हुए विशुद्ध नैतिकतावादी ढंग से अपनी दुनिया और जीवन जीने में विश्वास करता है उससे मुक्त होने की इच्छा या कामना करना अथवा घर की दहलीज लाघंना थी वह अनुचित मानता है। स्त्रियों का दूसरा वर्ग वह है जो घर परिवार के दायरे से बाहर निकलकर कैरियर की नई–नई ऊचाइयाँ छुकर उपलब्धियों के अंबार लगाना चाहता है। हालांकि उन उपलब्धियों मैं वह अपनी सभ्यता संस्कृति के प्रति आस्था और घर–परिवार के बीच ही पूरी तरह जीने के सामाजिक सरोकार को भी बरकरार रखने की इच्छा पालता है। स्त्रियों का तीसरा वर्ग है जो परंपरा नैतिकता, परिवार व सामाजिक सरोकारो को लेकर अलग ढंग से सोचता है। वह वर्ग सभी रूढ़ियों को धता बताते हुये व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाकर जीने का ढंग और शर्ते खुद निर्धारित करना चाहता है।

स्त्री जाति स्नेह और सौजन्य की देवी है वह नर–पशु को मनुष्य बनाती है वाणी से जीवन को अमृतमय बनाती है उसके नेत्र मे आनन्द का दर्शन होता है वह संतुष्ट हृदय की शीतल धारा है उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है।

इसी स्त्री के विषय में अनादिकाल से तरह–तरह की बाते होती रही है कभी पक्ष में कभी विपक्ष में स्त्री पुरूष की सबसे बड़ी ताकत है पुरूष की जिन्दगी अधुरी है स्त्री उसे पूर्ण करती है। पुरूष की जिन्दगी अंधेरे में है स्त्री उसे रोशनी देती है। पुरूष की जिन्दगी फीकी और नीरश है स्त्री उनमें रौनक लाती है उसे सरस बनाती है और जीवन के प्रति उत्साह पैदा करती है स्त्री के अभाव में पुरूष की दुनिया वीरान और मरघट के समान नीरस होती है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

वर्तमान और वास्तविक तथ्यों पर स्त्री के मस्तिष्क का केन्द्रीकरण जहाँ एक तरफ गलतियों की संभावना पैदा करता है वही इन गलतियों को दूर करने का काम भी करता है। एक चितंनशील मस्तिष्क का सबसे बड़ा चारित्रिक दोष यही होता है वह वर्तमान और मौजूदा स्थिति की व्यावहारिकता को पूरी जीवंतता के साथ महसूस नहीं कर सकता। भारत में स्त्री को उसके वाजिब अधिकार दिलाने का अभियान सैद्धान्तिक और सांस्कृतिक स्तर पर उन्नीसवी सदी में ही प्रारंम्भ हो गया था स्वामी दयानंद, राजा राम मोहन राय सरीखे कई समाज सुधारको ने स्त्री के उद्धार की आवाज उठाई थी।

स्त्रीत्व के दूसरे अर्थ की चुनौती में और भी अधिक विकट समस्या निहित है इनका सम्बन्ध रिश्तों और जीवन स्थितियों के साथ है प्रेम, दाम्पत्य, मातृत्व और धर आधुनिक संदर्भों में एक और स्थिति शामिल हो गई है कामकाजी औरत का मायके के लिये जिम्मेदारी का अहसास, इस सिलसिले में कई बार आजीवन कौमार्य का निर्णय और अंततः खालीपन और अकेलेपन की विवशताएं।

पितृसतात्मक नियमों को खत्म करने का महिलाओं का संघर्ष सभ्य समाज को विकास के दौरान ही शुरू हो गया था। परंतु दो शताब्दी पूर्व, पश्चिम से औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत से महिलाओं को खेत–खलिहान व रसोई से तुलनात्मक अलगाव से बाहर निकलकर शहरों में सामूहिक उत्पादन के केन्द्रों पर रोजी–रोटी के लिये आना पड़ा इतिहास में पहली बार बड़ी संख्या में स्त्रियाँ उद्योगों तथा कार्यशालाओं मैं काम करने इकट्ठी हुई।

आज एक सवाल और चल रहा है जिसे राजेन्द्र यादव जी प्रायः उठाते है। उनका कहना है समाज ने स्त्री की देह को दो भागों में बांट दिया है। स्त्री की देह का ऊपरी हिस्सा सुंदर माना जाता है दूसरा पेट से नीचे का हिस्सा अश्लील व गोपनीय माना जाता है स्त्रियों को इसी हिस्से के कारण हीन ही नही, वर्जित भी माना गया है। यह सोच या अवधारणा हमारे मध्यमवर्गीय समाज के या अभिजन्य समाज के संदर्भ में काफी हद तक रही है। सारे भक्त व संत, कवि गुरू, महात्मा स्त्री को उसके इसी हिस्से के कारण वर्जित मानते है। अध्यात्मशास्त्र भी स्त्री के इस हिस्से के संदर्भ में एक विचित्र विरोधाभास पालता है पूरा का पूरा अध्यात्म पक्ष स्त्री से रोशनी को खतरा मानता है दंड़नीय मानता है जबकी अध्यात्म बघारने वाला उसी अश्लील हिस्से से जन्म लेता है वह अपनी मां को तो ऊँचा स्थान देता है उसके मातृत्व या प्रजन्न शक्ति का भी गौरवान्वित करता है पर वह अपनी मां को भी भरोसे लायक नही मानता इसका मनोवैज्ञानिक कारण तो यही है। कि पुरूष को खुद अपने पर विश्वास नही होता और वह अपने चरित्र की कसौटी स्त्री वर्जना को मान लेता है वह कही स्त्री के संसर्ग में खुद ही न फिसल जाय इसलिए वह स्त्री से दूर रहने का उपदेश देता है। स्त्री के इसी हिस्से को लेकर पुरूष व समाज ने एक से बढ़कर एक गालियां भी गढ़ रखी है और वे इसी हिस्से के प्रति लालायित ही नही रहते बल्कि उसके भोग को

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

मर्दानगी का प्रतीक भी मानते है जो उसे धारण करती है। वह गहिर्त है। पुरूष जो उसे भोगता है पूरा मर्द है यह है स्त्री के इस हिस्से का समाजशास्त्र।

एल० टी लियाना खियाडते ने पुरूष अंहकार का एक दर्दनाक किस्सा मिजो कवयित्री पिहमुअकी का उदाहरण देते हुए बताया है कि पिहमुअकी ने हर अवसर के लिये सुंदर–सुंदर गीतो की रचना करनी शुरू कर दी मिजो समाज को लगा कि यदि ये स्त्री ही सारी कविताएँ रच देगी तो उनके लिए क्या बचेगा फलस्वरूप उस कवयित्री को जिन्दा दफना दिया गया उस कवयित्री की संवैदनशीलता की यह पराकाष्ठा देखिए कि दफनाते वक्त भी वह कविता में ही बोली ''ऐ नवयुवको जरा नफासत से दफनाओं''।

खियाडते आगे कई उदाहरण देते हुए कहते है यह सच है कि औरतो पर आदिवासी कबीलों मैं भी जुर्म होते रहे है लेकिन औरत मे केवल प्रतिरोध ही नही किया, बल्कि अपनी बात पूरे तर्क के साथ रखी। इतना ही नहीं आदिवासी वीरांगनाओं ने वक्त आने पर समाज और देश को बचाने के लिये तीर भी संभाला और तलवार भी। झारखंड मैं मिकी, झानो माको, थिगी, नागी, स्नगीदई, भलीदई, चम्पी, लेम्बू, डुेन डंग मुंडा, मडिया गुडे बनकर मुंडा की पत्नियां संथाल हूल, निरसा उलगुलान, टाना रिवदाडते ने मिजो की वीरागनाओं में पिहमुनकी, रूपुईलिदानी, दरपोड़ी, ललचेरी, लियानहयारी और सैकुती आदि नामो का उल्लेख भी किया है। जो विदुषी भी थी और वीरगंनाए भी।

भारतीय समाज मूलतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना पर आधारित है जिसमे परिवार एक इकाई है संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार है किन्तु स्वातन्त्रोतर भारत में तीव्रगति से औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया के परिणास्वरूप संयुक्त परिवार निरन्तर टूट रहे है। एकाकी परिवारों की संख्या दिन–पर–दिन बढ़ती जा रही है। संयुक्त परिवार में जहाँ एक–दूसरे की भावना को समझने, छोटे–बड़े का शिष्टाचार व मेल–मिलाप से रहने की भावना निहित थी जो एक सांस्कृतिक परम्परा के रूप में अब तक चली आ रही थी वहीं आज एकाकी परिवार के रूप में घुटन और कष्ट सहने के लिए बाध्य है। परिवार समाज की इकाई है संयुक्त परिवार के टूटने के कारण भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अधिक दयनीय हुई है बदली हुई परिस्थितियों में विवाह–विच्छेद जैसे कानूनों के कारण उसे निश्चित ही अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है खुले प्रेम और किसी का भी नियन्त्रण स्वीकार न करने की भावना ने भी स्त्रियों की स्थिति को दयनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्त्रियों में बढ़ती हुई उच्च शिक्षा और हर क्षेत्रों में साथ–साथ कार्य करने के कारण पति–पत्नी के मधुर संबंधों में एक तरफ सुधार हुआ है तो दूसरी तरफ बिखराव भी दिखाई देता है।

मार्क्स और एंगेल्स ने जिस 'मानव–मुक्ति' के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया वह मानव अघोषित रूप से पुरूष ही है इतना ही नही बल्कि इन्होंने स्त्री–मुक्ति के विचार को भी पुरूष नजरिए से ही देखा है शीला रोबाथँम ने डायलेक्टिकल डिस्टर बेंसिसज बोमेन रजिस्टेस

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

एण्ड रिवोल्यूशन' में कहा है। मे यह नही कहना चाहती कि मार्क्स और एंगेल्स औरत होते तो वे नारी मुक्ति की समस्या का अन्तिम हल पेश कर देते लेकिन यह एक तथ्य है। कि वे औरतों को पुरूष की आँखों से देखने के लिए मजबूर थे वे मजदूर वर्ग की औरतों को एक मध्यवर्गीय पुरूष की निगाह से देखते है इसका असर पड़ना ही था उन्होंने जिस तरह देखा और जहा देखा उस पर उनके पुरूष होने का प्रभाव पड़ा।

समाजशास्त्री इस बारे में एकमत है कि समाज, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि सभी पहलुओं की संरचना पुरूष के हितो और आकांक्षाओं के अनुरूप विकसित हुई और इस प्रक्रिया में औरत की आकांक्षाओं की पूरी तरह अनदेखी की गई है यही कारण है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ अपवाद स्थितियों को छोड़कर, औरत स्वयं को समाज के अभिन्न अंग के रूप में नहीं, बल्कि एक बाहरी तत्व के रूप में पाती है। हमारे ऋषियों और तत्त्व मीमांसाओं ने घोषणा कर दी कि स्त्री मोक्ष के मार्ग में बाधा है इसका अर्थ यह हुआ कि मोक्ष की आवश्यकता पुरूष को है। महिला को नही मानो स्त्री व्यक्ति नहीं है व्यक्ति से पृथक है।

विडंबना यह है। कि स्त्री को दुर्बल बनाने के बाद उसकी दुर्बलता को बराबर पुष्ट करते रहने की अनवरत चेष्ठा की जाती है हमारा समूचा वाङमय धर्म–दर्शन, नीति शास्त्र, पुराण, साहित्य, कलाए, नाटक, लोककलाएं और आज के युग में विज्ञापन, फिल्में और टी०वी० सीरियल बराबर औरत की दुर्बलता और सम्मान एवं अस्तित्व के लिए पुरूष पर उसकी निर्भरता का डंका पीटते रहे है। अपहरण, बलात्कार, छेड़–छाड़ योन शोषण सरीखी घिनौनी हरकतों का सहारा लेकर पुरूष स्वयं ही एक और तो औरत को विवश बनाता है और दूसरी और इन्ही हरकतों से उसे बचाने की कोशिश करके वह स्त्री की मानरक्षा के दावे के साथ उसे दोहरी दुर्बलता का एहसास भी कराता है इस षडयंत्र में फंसी नारी पुरूष को अपना रक्षक मानने को विवश है।

दूसरी और पुरूष समुदाय ने परिवार और समाज के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की जिम्मेदारी मूलतः औरत को ही सौंप रखी है औरत घर की इज्जत की रखवाली भी है इसलिए कभी अपनी दुर्बलता से वशीभूत होकर तो कभी पुरूष–निर्मित व्यवस्था की बनाए रखने के कर्तव्य का निर्गह करते हुए वह प्रायः ऐसा आचरण करती है जिससे यह झलकता है कि औरत स्वयं औरत की दुश्मन है।

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते है कि नये युग के सुप्रवेश के साथ ही नारी ने भी करवट बदली है। उसके दृष्टिकोण मैं शनैःशनैः परिवर्तन की ब्यार चल पड़ी हैं। उन्मुक्त ब्यार अब उसके लिए मुक्ति का अर्थ शक्ति के अर्थ मैं तब्दील होता नजर आ रहा है। अब यह सोचने के लिये बाध्य हुई दिखती है कि उसका शरीर पुरूष के जंग का मैदान नही है जहाँ वह अपनी विजय के झंडे गाड उसे जूठी समझ कर फेंक दे अब वह पुरूष द्वारा आरोपित तमाम विरोधो और वर्जनाओं के रहते हुए हर मोंचे पर प्रतिस्पर्दा की भावना से उससे भिड़ती, उससे टक्कर लेति निरन्तर आगे बढ़ रही है। अब वह अपने लिये जिदंगी

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

जीने के नये–नये प्रतिमान तलाशने लगी है आज वह बुर्के व पर्दे की प्रथा तोड़ रही है और समय के साथ बदलते परिधानों के साथ अपना रिश्ता जोड़ रही है अब वह एक कुनबे और उसकी निर्धारित मान्यताओं से जुड़े नही रहना चाहती, पर उन्हें तोड़ सारी दुनिया से जुड़ना चाहती है। एक नये सिरे से, अब वह हर विषय पर पुरूष के साथ सहमति नही जता सकती हाँ मैं हाँ नही मिला सकती, ना में ना नही मिला सकती। उसने चुप्पी तोड़ने की बात रखी है। ताकि एक नयी उजास हो जिसमें उसकी पहचान प्रखर हो अब वह पुरूष की शर्तों पर समाज के संस्कारों को नही बदलना चाहती है वह रीति–रिवाज बदलना चाहती है परम्परांए बदलना चाहती है जीना चाहती है सात फेंरो का अभिप्राय बदलना चाहती है वह तलाक और मेहर के अर्थ बदलना चाहती है। वह अपने से जुड़ी–खरीद फरोख्त की अवधारणा को ही निर्मूल करना चाहती है वह सहमति जुटाने से पहले बतियाना चाहती है अब वह नैतिकता के सवाल पर अंगुली उठाने लगी है। अब वह वर्चस्व के सवाल पर अंगुली उठाने लगी है। जब वह मर्यादा के सवाल पर अंगुली उठाने लगी है वह अब अपनी हँसी हसने लगी है अब वह मौत के फतवों के बीच में भी मधुर–मधुर गीत गाने लगी है अब वह शक्ति–प्रदर्शन करने लगी है पूर्व का पश्चिम से नाता जोड़ने लगी है अब वह दुनिया को अपनी दृष्टि से देखने लगी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रमणिका गुप्ता, (2014) स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, सामायिक प्रकाशन 3320–21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली–110002 पृ०सं० 23
2. वही, पृ०स० 23
3. डा० विनय कुमार पाठक, (1999) स्त्री–विमर्श, भावना प्रकाशन–2005 109–A, पपड़गंज दिल्ली 110091, पृ०स० 2
4. वही, पृ०स० 57
5. डा० इन्द्र बहादुर सिंह, यादों के उजाले, अभय प्रकाशन–1999 128/20 डी ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर–108011, पृ०स० 57
6. स्त्री और पराधीनता प्रकृति, शक्ति और भूमिका से जुड़े प्रश्न The subjecttion of Women, जॉन स्टुअर्ट मिल Stree aur Paradhinta (Subjection of women by- Jotin Start Mill, Hinditranslation by yogankdhir Published by sumvad prakashan (2020) Publshid 1-499, shastri Nagar, Meerut 250004, India
7. सुभाष सेतिया, (2006) स्त्री अस्मिता के प्रश्न, (नारी विमर्श), प्रकाशन कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320–21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 4 – Dec 2024
UGC CARE I

8. अस्मिता–विमर्श का स्त्री–स्वर, अर्चना वर्मा, प्रकाशक मेधा बुक्स एपूरू–11, नवीन शाहदरा दिल्ली–110032 (2008)
9. कुसुम त्रिपाठी, (2013) स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष, भावना प्रकाशन 109 की पपडगंज दिल्ली–110091
10. रमणिका गुप्ता पृ०स० 135
11. रमणिका गुप्ता पृ०स० 161
12. रमणिका गुप्ता पृ०स० 161
13. डॉ० शिवप्रसाद सिंह, आधुनिक परिवेश और नवलेखन, पृ०स० 35
14. डा० विनय कुमार पाठक, (1999) स्त्री–विमर्श, भावना प्रकाशन–2005 109–A, पपड़गंज दिल्ली 110091, पृ०स० 75
15. दिनेश धर्मपाल 2007, स्त्री, भावना प्रकाशन 109–A,पपड़गंज दिल्ली–110091

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved